# ओ३म्

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

*बृहदारण्यकोपनिषद 5:1:1*



# उपनिषदानुक्रमणिका

# Upanishad Index

अथातः पवमानानामेवाभ्यारोहः । स वै खलु प्रस्तोता साम प्रस्तौति । स यत्र प्रस्तुयात् तदेतानि जपेद् **असतो मा सद् गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्माऽमृतं गमयेति** । स यदाहासतो मा सद्गमयेति मृत्युर्वा असत् सदमृतम् मृत्योर्माऽमृतं गमयामृतं मा कुर्वित्येवैतदाह । तमसो मा ज्योतिर्गमयेति मृत्युर्वै तमो ज्योतिरमृतम् मृत्योर्मामृतं गमयामृतं मा कुर्वित्येवैतदाह । मृत्योर्मामृतं गमयेति नात्र तिरोहितमिवास्त्य् अथ यानीतराणि स्तोत्राणि तेष्वात्मनेऽन्नाद्यमागायेत् तस्मादु तेषु वरं वृणीत यं कामं कामयेत त । स एष एवंविदुद्गाताऽऽत्मने वा यजमानाय वा यं कामं कामयते तमागायति । तद्धैतल्लोकजिदेव न हैवालोक्यताया आशास्ति य एवमेतत्साम वेद ॥

बृहदारण्यकोपनिषद 1:3:28

Writer & Publisher- Sandeep Arya (Om aryavart)

E-Mail- sandeepahlawat31@gmail.com
Whatsapp- 7497042040

First edition – February , 2025
PDF VERSION ONLY

- Price- आपकी इच्छा

ICICI Bank, Panipat.

Account holder – Sandeep

A/C Number – 017401559289

IFSC Code- icic0000174

**UPI ID- 7497042040@ICICI**

संपर्क:

संदीप आर्य

पानीपत, हरियाणा

Sandeepahlawat31@gmail.com

## समर्पण

वैदिक ऋषियों को समर्पित,

उपनिषदों के ऋषियों को समर्पित।

उनके ज्ञान, तपस्या और आध्यात्मिक अनुभवों के लिए,

जिन्होंने मानवता को उपनिषदों की अमृतवर्षा से लाभान्वित किया।

## ध्यान देने योग्य बात-

- उपनिषद वेदांत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें ईश्वर यानी ब्रह्म की महिमा का वर्णन किया गया है। उपनिषदों में ऋषियों द्वारा अपने शिष्यों या जिज्ञासु व्यक्तियों को ज्ञान देने के लिए किए गए संवादों का संग्रह है। इन संवादों में ऋषि धीरे-धीरे विषय को परिपुष्ट करते हैं और अंत में सत्य का प्रकटीकरण होता है। इसलिए, उपनिषदों को समझने के लिए पूरे अध्याय या खंड को पढ़ना आवश्यक है, क्योंकि बीच में किसी एक वाक्य या श्लोक को उठाने से सत्य का पूरा अर्थ नहीं समझा जा सकता है।

## दो शब्द पाठक मित्रों के लिए

नमस्ते, वैदिक धर्मी मित्रों, उपनिषद इंडेक्स PDF पुस्तक को बनाने के पीछे मेरा उद्देश्य यह है कि अधिकांशतः वैदिक धर्मी लोगों से जब कोई उपनिषदों के विषय में कुछ पूछता है तो उनको उसका रेफरेंस नहीं पता होता क्योंकि उपनिषद पुस्तक बहुत अधिक श्लोक होने के कारण उनको याद रखना कठिन है। इसलिए यह उपनिषद इंडेक्स उनके लिए लाभदायक सिद्ध होगा जिनको उपनिषद के किसी विषय के बारे में झट से रेफरेंस जानना हो। यह आपके डिबेट में झट से रेफरेंस प्राप्त करने के लिए और अपने स्वाध्याय करने के लिए यह इंडेक्स बहुत काम आएगा और आपको उपनिषदों के गहन अर्थ को समझने में सहायक होगा।

सैकड़ों रेफरेंस होने के कारण टाइपिंग में कोई त्रुटि संभव है, इसलिए अगर आपको कोई त्रुटि लगे तो मुझे व्हाट्सएप पर मैसेज कर दें, मैं उसको संशोधित कर दूंगा। आपके सहयोग और समर्थन के लिए धन्यवाद।

-संदीप आर्य (OM ARYAVART)

# Upanishads-INDEX


1. ईशावास्योपनिषद
2. केनोपनिषद
3. कठोपनिषद
4. प्रश्नोपनिषद
5. मुण्डकोपनिषद
6. माण्डूक्योपनिषद
7. तैत्तिरीयोपनिषद
8. ऐतरेयोपनिषद
9. छान्दोग्योपनिषद
10. बृहदारण्यकोपनिषद
11. श्वेताश्वतरोपनिषद

# उपनिषदों में श्लोकों का वर्गीकरण

1. ईशावास्योपनिषद में श्लोकों का वर्गीकरण-

ईशावास्योपनिषद-12

श्लोक(मंत्र) संख्या-12

2. केनोपनिषद में श्लोकों का वर्गीकरण-

केनोपनिषद-2:5

खंड : श्लोक

↓ ↓

2 : 5

3.कठोपनिषद में श्लोकों का वर्गीकरण-

कठोपनिषद-2:3:9

अध्याय : वल्ली : श्लोक

↓ ↓ ↓

2 : 3 : 9

4. प्रश्नोपनिषद में श्लोकों का वर्गीकरण-

प्रश्नोपनिषद 4:10

प्रश्न : श्लोक

↓ ↓

4 : 10

5. मुण्डकोपनिषद में श्लोकों का वर्गीकरण-

मुण्डकोपनिषद-3:1:8

मुण्डक : खंड : श्लोक

↓ ↓ ↓

3 : 1 : 8

6. माण्डूक्योपनिषद में श्लोकों का वर्गीकरण-

माण्डूक्योपनिषद-8

श्लोक

↓

8

7. तैत्तिरीयोपनिषद में श्लोकों का वर्गीकरण-

तैत्तिरीयोपनिषद- शिक्षावल्ली:5:4

ब्रह्मानंदवल्ली:6:2

भृगुवल्ली:10:3

| वल्ली | : अनुवाक | : श्लोक |
|---|---|---|
| ↓ | ↓ | ↓ |
| शिक्षावल्ली | : 5 | : 4 |
| ब्रह्मानंदवल्ली | : 6 | : 2 |
| भृगुवल्ली | : 10 | : 3 |

8. ऐतरेयोपनिषद में श्लोकों का वर्गीकरण-

ऐतरेयोपनिषद-1:2*:5

2:3

3:3

अध्याय : खंड : श्लोक

↓ ↓ ↓

1 : 2 : 5

अध्याय : श्लोक

↓ ↓

2 : 3

* <u>ऐतरेयोपनिषद के पहले अध्याय का विभाजन ही खंड और श्लोकों में हुआ है। बाकी दूसरे और तीसरे अध्याय में खंड नहीं है,सिर्फ अध्याय और उसके अंतर्गत श्लोक हैं।</u>

9. छान्दोग्योपनिषद में श्लोकों का वर्गीकरण-

छान्दोग्योपनिषद-6:10:2

अध्याय : खंड : श्लोक

↓ ↓ ↓

6 : 10 : 2

10. बृहदारण्यकोपनिषद में श्लोकों का वर्गीकरण-

बृहदारण्यकोपनिषद-8:1:4

अध्याय : ब्राह्मण : श्लोक

↓ ↓ ↓

8 : 1 : 4

11. श्वेताश्वतरोपनिषद में श्लोकों का वर्गीकरण-

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:7

अध्याय : श्लोक

↓ ↓

6 : 7

वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगाद् यतयः शुद्धसत्त्वाः।

ते **ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले** परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे।।

मुण्डकोपनिषद-3:2:6

# संदर्भ तालिका

1. ओंकार, प्रणव,उद्गीथ व्याख्या
2. ईश्वर आनंद स्वरूप है
3. ईश्वर सर्वज्ञ है
4. ओ३म पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
5. ईश्वर अंतर्यामी है
6. ईश्वर अद्वैत है
7. ईश्वर अव्यवहार्य है
8. ईश्वर चेतना मुख है
9. ईश्वर इंद्रियातीत है
10. ईश्वर से ही प्राण क्रियाएं-कंपन संभव है

11. ईश्वर तत्व क्या है,कैसा है,कौन है

12. ईश्वर हर भौतिक पदार्थ का निमित्त कारण है

13. ईश्वर मान-अपमान, आदर-निरादर से ऊपर है

14. ईश्वर सूक्ष्मातिसूक्ष्म और महतोमहत् है

15. ईश्वर एक है

16. ईश्वर अचल है

17. ईश्वर सर्वव्यापक है

18. ईश्वर निराकार है

19. ईश्वर सर्वद्रष्टा है

20. ईश्वर निराधार है

21. ईश्वर शुभ अशुभ कर्मों से रहित है

22. ईश्वर सूक्ष्मातिसूक्ष्म है

23. ईश्वर सर्वोत्कृष्ट है

24. ईश्वर रचित सृष्टि प्रवाह से अनादि है

25. ईश्वर अक्षत है

26. ईश्वर जन्म मरण से रहित है

27. ईश्वर शुद्ध है

28. ईश्वर स्वयंभू है

29. संपूर्ण सृष्टि में ईश्वर की निमित्ता को हटा देने से यानी कार्य-ब्रह्म(भौतिक पदार्थ) को हटा देने से ही हम ब्रह्म के स्वरूप को जान (ज्ञानचक्षु)सकते हैं

30. ईश्वर (ब्रह्म) सत्य है

31. ईश्वर अविनाशी है

32. ईश्वर गुरुओं का भी गुरु है

33. ईश्वर अनंत है

34. ईश्वर ज्ञानस्वरूप है

35. ईश्वर किसी सीमित वस्तु के अंदर या बाहर, आगे या पीछे नहीं है, जैसे कि वह कोई सीमित वस्तु हो

36. ईश्वर तर्क से परे है

37. ईश्वर के मूर्त तथा अमूर्त रूप की मीमांसा

38. ईश्वर नित्य है

39. ईश्वर अनादि है

40. संसार चक्र काल या स्वभाव से नहीं चल रहा है। बल्कि इसका कारण ईश्वर है

41. ईश्वर महाकाल है

42. चेतन का जड़ से सहयोग करवा कर ईश्वर सृष्टि बनता है

43. ईश्वर में ज्ञान ,बल,क्रिया स्वाभाविक है

44. ईश्वर के ऊपर कोई (शासक) नहीं है

45. ईश्वर का कोई लिंग नहीं है

46. परमसूक्ष्मता में परमात्मा ही शेष रहता है

47. ईश्वर की परमसूक्ष्मता में, न वहां सूर्य चमकता, न वहां चंद्रमा चमकते, न तारे चमकते,अग्नि की तो बात ही क्या

48. सब देवों का देवत्व एक देव(परमात्मा) से ही है

49. भिन्न-भिन्न पदार्थों में ईश्वर को भी भिन्न-भिन्न मानकर जो उपासना करता है वह नासमझ है

50. मोक्षकल, मोक्ष की अवधि सीमित है

51. जो ईश्वर में नानात्व को देखते हुए भी उसको एक जानता है वही मृत्यु को तरता है

52. योगी को ईश्वर तत्व का अच्छे से बोध हो जाने के बाद ज्यादा शब्दजाल में नहीं उलझना चाहिए

53. मुक्तिकाल के बीच में पुनरावृत्ति नहीं होती

54. विद्वान आत्मस्थ लोग फिर संतान की इच्छा नहीं करते

55. सांसारिक पदार्थों को अनासक्त रूप से भोगो

56. सुकर्म करते हुए ही 100 वर्ष तक जीने की कामना करो

57. अवैदिक कर्म आत्मा विरुद्ध कर्म (आत्महत्या) करने वाले अंधकार में योनियों में उत्पन्न होते हैं

58. जो मनुष्य न अध्यात्म को जानता, न भौतिकवाद को जानता, वह अंधकार में गिरता है

59. 33 देवता

60. विद्या या अविद्या मात्र एक की उपासना अंधकार में डालती है

61. विद्या व अविद्या दोनों को जानके ही वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति होती है

62. स्वप्नावस्था

63. प्रकृति और ईश्वर को ठीक- ठीक जानने वाला मोक्ष प्राप्त करता है

64. शरीर का जलाकर अंतिम संस्कार

65. नमस्ते

66. प्रज्ञानं ब्रह्म

67. पांच महासंहिताएं

68. महाव्याहृतिया

69. जीव(आत्मा)कहां रहती है

70. तप महिमा

71. अन्न महिमा

72. प्राण महिमा

73. आनंद मीमांसा

74. गायत्री महिमा

75. पुराने पापों को लेकर आत्मा को दुख नहीं पहुंचना चाहिए

76. अन्न ब्रह्म

77. रात को रति क्रिया ब्रह्मचर्य ही है

78. ब्रह्मविद्या (वेद) सर्व विद्या का आधार है

79. ऋषि भी सर्वज्ञ नहीं होते

80. परा विद्या

81. अपरा विद्या

82. मोक्ष उपदेश

83. वेदोक्त मार्ग(धर्म) ही सर्वश्रेष्ठ है

84. हवन आचार

85. मात्र कर्मकांडों से मोक्ष नहीं मिलता

86. जो ईश्वर को नहीं जानते वे उसकी ऋचाओं से क्या ही कर लेंगे

87. संपूर्ण प्रजा किससे उत्पन्न होती है

88. मधुमक्खियों में एक रानी मक्खी होती है

89. धन से मुक्ति नहीं होती

90. पुनर्जन्म

91. उपनिषद गुरु-शिष्य परंपरा

92. ब्रह्म यज्ञ

93. मृत्यु के बाद आत्मा का दूसरा शरीर धारण करने में लगने वाले समय का एक कीड़े के उदाहरण से समझाना

94. जीवात्मा अजन्मा है

95. मृत्यु काल में जीवात्मा की अवस्था कैसी होती है

96. नचिकेता की कथा

97. आदित्य की देवमधु कल्पना

98. जीवात्मा और शरीर संबंध(रथ-रथी फिलासफी)

99. परमात्मा-प्रकृति-जीवात्मा-शरीर संबंध विज्ञान

100. त्रैतवाद

101. योग (ईश्वरोपासना-मोक्ष)

102. काल संसार का कारण नहीं है

103. परमात्मा का अनुभव आत्मा से ही संभव है

104. प्राणायाम

105. मोक्ष प्राप्ति के लिए ईश्वर को जानने के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं

106. जीवात्मा कर्मानुसार भोग भोक्ता है

107. कामता व निष्कामता

108. जीवात्मा कैसा है

109. कर्म वा चेतनानुसार आत्मा शरीर धारण करता है

110. जीवात्मा की मोक्ष अवस्था में पहुंचने की यात्रा

111. मन ही दिव्य नेत्र है

112. यथा पिंडे तथा ब्रह्मांडे

113. इंद्र को प्रजापति द्वारा 108 वर्ष में ब्रह्म उपदेश

114. अच्छा -बुराई (देव-दानव) का मनोविज्ञान

115. तमसो मा ज्योतिर्गमय

116. अच्छाई की भी अति नहीं करनी चाहिए

117. सृष्टि रचना का अलंकारिक व गुढ उपदेश

118. मैं (अहम्) का दर्शन (philosophy)

119. आत्मा(जीवात्मा व परमात्मा) इन दोनों के अतिरिक्त कुछ भी प्रिय मत समझो

120. ब्राह्मण धर्म व क्षत्रिय धर्म एक दूसरे के पूरक हैं

121. भगवान श्री कृष्ण अवतार या ईश्वर नहीं थे

122. देवकी पुत्र कृष्ण

123. समाज का पोषण-भरण करने से पृथ्वी व शुद्र एक समान कह गए हैं

124. धर्म का स्वरूप

125. निर्बल का बल है धर्म

126. जीवात्मा के जाने बिना परमात्मा को नहीं जाना जा सकता

127. ब्रह्म विद्या (आध्यात्मिक उन्नति)

128. नाम रूप कर्म क्रिया

129. पृथ्वी आकाश में स्थित है

130. सांसारिक वासनाओं में हम भय के कारण फसते हैं।

131. कुत्तों की हिंकार

132. गांय उदगीत है

133. प्रजापति द्वारा 'द' का मनुष्य,देव,असुर को उपदेश

134. वसु रुद्र आदित्य 24,44,48 वर्ष का ब्रह्मचर्य

135. होम हवन क्रिया

136. गर्भाधान

137. रैक्क मुनि का उपदेश

138. सत्यकाम जाबाल की कथा

139. सत्य ही ब्राह्मण की पहचान है

140. यज्ञ का ब्रह्मा कैसा हो

141. न्यायोचित हिंसा गलत नहीं है

142. महर्षि नारद की आत्मवेत्ता होने की कथा

143. वाक तेजोमय है

144. तत्वमसि का रहस्य

145. अश्वपति का ब्रह्म उपदेश

146. श्वेतकेतु की कथा

147. पंचविध सामोपासना

148. अश्वमेध

149. अहम् ब्रह्मास्मि

# 1.ओंकार, प्रणव,उद्गीथ व्याख्या

माण्डूक्योपनिषद- 1-12

तैत्तिरीयोपनिषद- शिक्षावल्ली:1:1

तैत्तिरीयोपनिषद- शिक्षावल्ली:8:1

मुण्डकोपनिषद-2:2:4-6

प्रश्नोपनिषद-5:1-7

कठोपनिषद-1:2:15-17

बृहदारण्यकोपनिषद-5:1:1

छान्दोग्योपनिषद- अध्याय-1(संपूर्ण)

छान्दोग्योपनिषद- अध्याय-2(संपूर्ण)

# 2-ईश्वर आनंद स्वरूप है

माण्डूक्योपनिषद- 5

मुण्डकोपनिषद-2:2:7

# 3. ईश्वर सर्वज्ञ है

माण्डूक्योपनिषद- 6

ईशावास्योपनिषद-8

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:2

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:16

मुण्डकोपनिषद-2:2:7

4. ओ३म पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।

बृहदारण्यकोपनिषद 5:1:1

# 5.ईश्वर अंतर्यामी है

माण्डूक्योपनिषद- 6

केनोपनिषद-2:5

ईशावास्योपनिषद-1

मुण्डकोपनिषद-2:1:4

बृहदारण्यकोपनिषद-2:5:1-19

बृहदारण्यकोपनिषद-3:4:1-2

बृहदारण्यकोपनिषद-3:7:1-23

# 6. ईश्वर अद्वैत है

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:19-20

माण्डूक्योपनिषद- 7

माण्डूक्योपनिषद- 12

# 7.ईश्वर अव्यवहार्य है

माण्डूक्योपनिषद- 7

माण्डूक्योपनिषद- 12

# ८.ईश्वर चेतना मुख है

माण्डूक्योपनिषद- 5

# 9.ईश्वर इंद्रियातीत है

माण्डूक्योपनिषद- 7

केनोपनिषद-1:1-8

ईशावास्योपनिषद-4

तैत्तिरीयोपनिषद- ब्रह्मानंदवल्ली:7:3

मुण्डकोपनिषद-3:1:8

कठोपनिषद-1:2:8

कठोपनिषद-1:3:15

कठोपनिषद-2:3:9

श्वेताश्वतरोपनिषद-4:20

बृहदारण्यकोपनिषद-3:7:1-23

बृहदारण्यकोपनिषद-3:8:11

# 10. ईश्वर से ही प्राण क्रियाएं-कंपन संभव है

तैत्तिरीयोपनिषद- ब्रह्मानंदवल्ली:7:1-3

# 11. ईश्वर तत्व क्या है,कैसा है,कौन है

माण्डूक्योपनिषद- 1-12

केनोपनिषद-1:1-8

केनोपनिषद-2:1-5

केनोपनिषद-3:1-12

केनोपनिषद-4:1-9

ईशावास्योपनिषद-4-5

ऐतरेयोपनिषद-3:1-4

तैत्तिरीयोपनिषद- शिक्षावल्ली:5:1-6

तैत्तिरीयोपनिषद- शिक्षावल्ली:8:1

तैत्तिरीयोपनिषद- ब्रह्मानंदवल्ली:7:1-3

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:1:1

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:2:1

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:3:1

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:4:1

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:5:1

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:6:1

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:7:1

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:8:1

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:9:1

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:10:1-6

मुण्डकोपनिषद-1:1:6-7

मुण्डकोपनिषद-2:1:2

मुण्डकोपनिषद-2:2:2

मुण्डकोपनिषद-3:1:7-8

प्रश्नोपनिषद-4:10

कठोपनिषद-1:2:8

कठोपनिषद-1:2:22-25

कठोपनिषद-1:3:15

कठोपनिषद-2:2:13

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:8-21

श्वेताश्वतरोपनिषद-5:1-6

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:1-23

बृहदारण्यकोपनिषद-2:1:1-20

बृहदारण्यकोपनिषद-2:5:1-19

बृहदारण्यकोपनिषद-3:7:1-23

बृहदारण्यकोपनिषद-3:8:7-11

बृहदारण्यकोपनिषद-4:2:4

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:17-20

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:22

छान्दोग्योपनिषद-3:12:6-9

छान्दोग्योपनिषद-3:14:1-4

छान्दोग्योपनिषद-3:18:1-6

छान्दोग्योपनिषद- 4:4:1-5

छान्दोग्योपनिषद- 4:5:1-3

छान्दोग्योपनिषद- 4:6:1-4

छान्दोग्योपनिषद- 4:7:1-4

छान्दोग्योपनिषद- 4:8:1-4

छान्दोग्योपनिषद- 4:9:1-3

छान्दोग्योपनिषद- 7:25:1-2

# 12. ईश्वर हर भौतिक पदार्थ का निमित्त कारण है

मुण्डकोपनिषद-1:1:6-7

केनोपनिषद-3:1-12
केनोपनिषद-4:1-9

# 13. ईश्वर मान-अपमान, आदर-निरादर से ऊपर है

छान्दोग्योपनिषद- 3:14:2-4

## 14. ईश्वर सूक्ष्मातिसूक्ष्म और महतोमहत् है

छान्दोग्योपनिषद- 3:14:3

# 15.ईश्वर एक है

ईशावास्योपनिषद-4

ऐतरेयोपनिषद-1:1:1

मुण्डकोपनिषद-3:2:10

कठोपनिषद-2:2:13

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:1-3

श्वेताश्वतरोपनिषद-4:14

श्वेताश्वतरोपनिषद-5:2-4

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:11

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:13

बृहदारण्यकोपनिषद-3:9:9

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:19-20

# 16. ईश्वर अचल है

ईशावास्योपनिषद-4

ईशावास्योपनिषद-5

कठोपनिषद-1:2:22

कठोपनिषद-1:3:15

श्वेताश्वतरोपनिषद-2:15

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:9

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:20

# 17. ईश्वर सर्वव्यापक है

ईशावास्योपनिषद-5

ईशावास्योपनिषद-6

मुण्डकोपनिषद-1:1:6

मुण्डकोपनिषद-2:2:11

मुण्डकोपनिषद-3:2:5

कठोपनिषद-1:2:22

श्वेताश्वतरोपनिषद-2:16

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:3

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:11

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:16

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:21

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:2

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:11

बृहदारण्यकोपनिषद-2:5:1-19

बृहदारण्यकोपनिषद-3:7:1-23

छान्दोग्योपनिषद- 7:25:1-2

# 18. ईश्वर निराकार है

ईशावास्योपनिषद-8

तैत्तिरीयोपनिषद- ब्रह्मानंदवल्ली:7:3

मुण्डकोपनिषद-1:1:6

मुण्डकोपनिषद-2:1:2

प्रश्नोपनिषद-4:10

कठोपनिषद-1:2:22

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:10

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:17

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:19

बृहदारण्यकोपनिषद-2:5:1-19

बृहदारण्यकोपनिषद-3:7:1-23

# 19. ईश्वर सर्वद्दष्टा है

ईशावास्योपनिषद-8

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:14

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:16

# 20. ईश्वर निराधार है

तैत्तिरीयोपनिषद- ब्रह्मानंदवल्ली:7:3

बृहदारण्यकोपनिषद-3:6:1

# 21. ईश्वर शुभ अशुभ कर्मों से रहित है

ईशावास्योपनिषद-8

# 22.ईश्वर सूक्ष्मातिसूक्ष्म है

मुण्डकोपनिषद-2:2:2

मुण्डकोपनिषद-3:1:7

कठोपनिषद-1:2:8

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:9

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:20

श्वेताश्वतरोपनिषद-4:14

श्वेताश्वतरोपनिषद-4:16

बृहदारण्यकोपनिषद-2:5:18

# 23. ईश्वर सर्वोत्कृष्ट है

ईशावास्योपनिषद-8

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:9

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:10

## 24. ईश्वर रचित सृष्टि प्रवाह से अनादि है

# ईशावास्योपनिषद-8

# 25. ईश्वर अक्षत है

ईशावास्योपनिषद-8

प्रश्नोपनिषद-4:10

## 26. ईश्वर जन्म मरण से रहित है

मुण्डकोपनिषद-2:1:2

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:21

# 27. ईश्वर शुद्ध है

ईशावास्योपनिषद-8

श्वेताश्वतरोपनिषद-2:15

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:11

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:20

# 28. ईश्वर स्वयंभू है

ईशावास्योपनिषद-8

29. संपूर्ण सृष्टि में ईश्वर की निमित्ता को हटा देने से यानी कार्य-ब्रह्म(भौतिक पदार्थ) को हटा देने से ही हम ब्रह्म के स्वरूप को जान (ज्ञानचक्षु)सकते हैं

ईशावास्योपनिषद-15

ईशावास्योपनिषद-16

# 30.ईश्वर (ब्रह्म) सत्य है

बृहदारण्यकोपनिषद-5:4:1

# 31. ईश्वर अविनाशी है

ईशावास्योपनिषद-14

ईशावास्योपनिषद-17

# 32. ईश्वर गुरुओं का भी गुरु है

तैत्तिरीयोपनिषद्- शिक्षावल्ली:1:1

# 33. ईश्वर अनंत है

तैत्तिरीयोपनिषद- ब्रह्मानंदवल्ली:1:1

कठोपनिषद-1:3:15

बृहदारण्यकोपनिषद-2:5:19

# 34. ईश्वर ज्ञानस्वरूप है

तैत्तिरीयोपनिषद- ब्रह्मानंदवल्ली:1:1

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:2

35. ईश्वर किसी सीमित वस्तु के अंदर या बाहर, आगे या पीछे नहीं है, जैसे कि वह कोई सीमित वस्तु हो

बृहदारण्यकोपनिषद-2:5:19

# 36. ईश्वर तर्क से परे है

कठोपनिषद-1:2:8

कठोपनिषद-1:2:23

# 37. ईश्वर के मूर्त तथा अमूर्त रूप की मीमांसा

बृहदारण्यकोपनिषद-2:3:1-6

# 38. ईश्वर नित्य है

कठोपनिषद-1:3:15

कठोपनिषद-2:2:13

# 39.ईश्वर अनादि है

कठोपनिषद-1:3:15

40. संसार चक्र काल या स्वभाव से नहीं चल रहा है। बल्कि इसका कारण ईश्वर है

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:1-3

# 41. ईश्वर महाकाल है

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:2

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:16

## 42. चेतन का जड़ से सहयोग करवा कर ईश्वर सृष्टि बनता है

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:3-5

43. ईश्वर में ज्ञान ,बल,क्रिया स्वाभाविक है

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:8

## 44. ईश्वर के ऊपर कोई (शासक) नहीं है

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:9

# 45. ईश्वर का कोई लिंग नहीं है

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:9

## 46. परमसूक्ष्मता में परमात्मा ही शेष रहता है

मुण्डकोपनिषद-2:2:10

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:14

47. ईश्वर की परमसूक्ष्मता में, न वहां सूर्य चमकता, न वहां  चंद्रमा चमकता, न तारे चमकते,अग्नि की तो बात ही क्या

मुण्डकोपनिषद-2:2:10

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:14

# 48. सब देवों का देवत्व एक देव(परमात्मा) से ही है

बृहदारण्यकोपनिषद-1:4:6

49. भिन्न-भिन्न पदार्थों में ईश्वर को भी भिन्न-भिन्न मानकर जो उपासना करता है वह नासमझ है

बृहदारण्यकोपनिषद-1:4:7

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:19-20

# 50. मोक्षकल, मोक्ष की अवधि सीमित है

मुण्डकोपनिषद-3:2:6

छान्दोग्योपनिषद-8:15:1

# 51.जो ईश्वर में नानात्व को देखते हुए भी उसको एक जानता है वह ही मृत्यु को तरता है

[बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:19-20] ×* [कठोपनिषद-2:1:11-12]

Note-*इसका मतलब यह है कि जब आप दोनों संदर्भों को एक साथ पढ़ेंगे तो विषय स्पष्ट हो जाएगा।

52. योगी को ईश्वर तत्व का अच्छे से बोध हो जाने के बाद ज्यादा शब्दजाल में नहीं उलझना चाहिए

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:21

## 53. मुक्तिकाल के बीच में पुनरावृत्ति नहीं होती

छान्दोग्योपनिषद-8:15:1

## 54. विद्वान आत्मस्थ लोग फिर संतान की इच्छा नहीं करते

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:22

# 55. सांसारिक पदार्थों को अनासक्त रूप से भोगो

ईशावास्योपनिषद -1

# 56. सुकर्म करते हुए ही 100 वर्ष तक जीने की कामना करो

ईशावास्योपनिषद - 2

## 57. अवैदिक कर्म आत्मा विरुद्ध कर्म (आत्महत्या) करने वाले अंधकार में योनियों में उत्पन्न होते हैं

ईशावास्योपनिषद–3

बृहदारण्यकोपनिषद–4:4:11

58. जो मनुष्य न अध्यात्म को जानता, न भौतिकवाद को जानता, वह अंधकार में गिरता है

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:11

# 59.  33 देवता

बृहदारण्यकोपनिषद-3:9:2-5

## 60. विद्या या अविद्या मात्र एक की उपासना अंधकार में डालती है

ईशावास्योपनिषद-9

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:10

## 61. विद्या व अविद्या दोनों को जानके ही वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति होती है

ईशावास्योपनिषद-10

ईशावास्योपनिषद-11

# 62.स्वप्नावस्था

प्रश्नोपनिषद-4:5

## 63. प्रकृति और ईश्वर को ठीक- ठीक जानने वाला मोक्ष प्राप्त करता है

ईशावास्योपनिषद-13

ईशावास्योपनिषद-14

# 64. शरीर का जलाकर अंतिम संस्कार

ईशावास्योपनिषद-17

बृहदारण्यकोपनिषद-5:11:1

बृहदारण्यकोपनिषद-6:2:13-14

# 65. नमस्ते

ईशावास्योपनिषद-18

तैत्तिरीयोपनिषद- शिक्षावल्ली:1:1

मुण्डकोपनिषद-3:2:11

प्रश्नोपनिषद-6:8

कठोपनिषद-1:1:9

बृहदारण्यकोपनिषद-3:8:5

# 66. प्रज्ञानं ब्रह्म

ऐतरेयोपनिषद-3:3

# 67. पांच महासंहिताएं

तैत्तिरीयोपनिषद- शिक्षावल्ली:3:1-7

# 68. महाव्याहृतिया

तैत्तिरीयोपनिषद्- शिक्षावल्ली:5:1-6

तैत्तिरीयोपनिषद्- शिक्षावल्ली:6:1-6

बृहदारण्यकोपनिषद-5:5:1-4

# 69. जीव(आत्मा)कहां रहती है

तैत्तिरीयोपनिषद- शिक्षावल्ली:6:1-2

प्रश्नोपनिषद-3:6

# 70. तप महिमा

तैत्तिरीयोपनिषद- शिक्षावल्ली:9:1

बृहदारण्यकोपनिषद-5:11:1

# 71. अन्न महिमा

तैत्तिरीयोपनिषद- ब्रह्मानंदवल्ली:2:1-3

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:2:1

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:7:1

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:8:1

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:9:1

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:10:6

# 72. प्राण महिमा

तैत्तिरीयोपनिषद- ब्रह्मानंदवल्ली:3:1-3

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:3:1

प्रश्नोपनिषद-2:1-13

प्रश्नोपनिषद-3:1-12

बृहदारण्यकोपनिषद-2:2:1-4

बृहदारण्यकोपनिषद-5:13:1-4

बृहदारण्यकोपनिषद-6:1:1-14

# 73. आनंद मीमांसा

तैत्तिरीयोपनिषद- ब्रह्मानंदवल्ली:8:1-13

बृहदारण्यकोपनिषद-4:3:33

# 74. गायत्री महिमा

बृहदारण्यकोपनिषद-5:14:1-8

छान्दोग्योपनिषद- 3:12:1-9

# 75. पुराने पापों को लेकर आत्मा को दुख नहीं पहुंचना चाहिए

तैत्तिरीयोपनिषद- ब्रह्मानंदवल्ली:9:1

# 76. अन्न ब्रह्म

तैत्तिरीयोपनिषद- भृगुवल्ली:2:1

बृहदारण्यकोपनिषद-5:12:1

## 77. रात को रति क्रिया ब्रह्मचर्य ही है

प्रश्नोपनिषद-1:13

# 78. ब्रह्मविद्या (वेद) सर्व विद्या का आधार है

मुण्डकोपनिषद-1:1:1

# 79. ऋषि भी सर्वज्ञ नहीं होते

प्रश्नोपनिषद-1:2

# 80. परा विद्या

मुण्डकोपनिषद-1:1:3

मुण्डकोपनिषद-1:1:4

मुण्डकोपनिषद-1:1:5

# 81. अपरा विद्या

मुण्डकोपनिषद-1:1:3

मुण्डकोपनिषद-1:1:4

मुण्डकोपनिषद-1:1:5

# 82. मोक्ष उपदेश

बृहदारण्यकोपनिषद-4:3:1-38

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:1-25

बृहदारण्यकोपनिषद-5:10:1

## 83. वेदोक्त मार्ग(धर्म) ही सर्वश्रेष्ठ है

मुण्डकोपनिषद-1:2:1

# 84. हवन आचार

मुण्डकोपनिषद-1:2:1-6

## 85. मात्र कर्मकांडों से मोक्ष नहीं मिलता

मुण्डकोपनिषद-1:2:1-13

श्वेताश्वतरोपनिषद-4:8

86. जो ईश्वर को नहीं जानते वे उसकी ऋचाओं से क्या ही कर लेंगे

श्वेताश्वतरोपनिषद-4:8

# 87. संपूर्ण प्रजा किससे उत्पन्न होती है

प्रश्नोपनिषद-1:1-16

## 88. मधुमक्खियां में एक रानी मक्खी होती है

प्रश्नोपनिषद-2:4

# 89. धन से मुक्ति नहीं होती

बृहदारण्यकोपनिषद-2:4:2

# 90. पुनर्जन्म

कठोपनिषद-1:1:6

कठोपनिषद-1:2:6

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:3-4

बृहदारण्यकोपनिषद-6:2:16

श्वेताश्वतरोपनिषद-5:10-12

# 91. उपनिषद गुरु-शिष्य परंपरा

बृहदारण्यकोपनिषद-2:6:1-3

# 92. ब्रह्म यज्ञ

कठोपनिषद-1:1:16

कठोपनिषद-1:1:17

कठोपनिषद-1:1:18

कठोपनिषद-1:1:19

## 93. मृत्यु के बाद आत्मा का दूसरा शरीर धारण करने में लगने वाले समय का एक कीड़े के उदाहरण से समझाना

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:3

# 94. जीवात्मा अजन्मा है

कठोपनिषद-1:2:18

## 95. मृत्यु काल में जीवात्मा की अवस्था कैसी होती है

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:1-2

# 96. नचिकेता की कथा

कठोपनिषद-1:1:1-29

कठोपनिषद-1:2:1-25

कठोपनिषद-1:3:1-27

# 97. आदित्य की देवमधु कल्पना

छान्दोग्योपनिषद-3:1:1-4

छान्दोग्योपनिषद-3:2:1-3

छान्दोग्योपनिषद-3:3:1-3

छान्दोग्योपनिषद-3:4:1-3

छान्दोग्योपनिषद-3:5:1-3

## 98. जीवात्मा और शरीर संबंध(रथ-रथी फिलासफी)

कठोपनिषद-1:3:3-9

## 99. परमात्मा-प्रकृति-जीवात्मा-शरीर संबंध विज्ञान

कठोपनिषद-1:3:1-6

कठोपनिषद-1:3:7-12

कठोपनिषद-1:3:13-17

# 100. त्रैतवाद

मुण्डकोपनिषद-3:1:1

श्वेताश्वतरोपनिषद-1:7-10

श्वेताश्वतरोपनिषद-4:5-6

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:4

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:6

बृहदारण्यकोपनिषद-2:1:1-10

बृहदारण्यकोपनिषद-2:1:11-20

कठोपनिषद-1:3:11

# 101. योग (ईश्वरोपासना-मोक्ष)

1. ईशावास्योपनिषद-संपूर्ण
2. केनोपनिषद-संपूर्ण
3. कठोपनिषद-संपूर्ण
4. प्रश्नोपनिषद-संपूर्ण
5. मुण्डकोपनिषद-संपूर्ण
6. माण्डूक्योपनिषद-संपूर्ण
7. तैत्तिरीयोपनिषद-संपूर्ण
8. ऐतरेयोपनिषद-संपूर्ण
9. छान्दोग्योपनिषद-संपूर्ण
10. बृहदारण्यकोपनिषद-संपूर्ण
11. श्वेताश्वतरोपनिषद-संपूर्ण

# 102. काल संसार का कारण नहीं है

श्वेताश्वतरोपनिषद-1:1-16

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:1-3

## 103. परमात्मा का अनुभव आत्मा से ही संभव है अर्थात अपने भीतर ही उसको प्राप्त करो

श्वेताश्वतरोपनिषद-1:14-16

छान्दोग्योपनिषद-8:1:1-6

छान्दोग्योपनिषद-8:2:1-10

छान्दोग्योपनिषद-8:3:1-5

छान्दोग्योपनिषद-8:4:1-3

छान्दोग्योपनिषद-8:5:1-4

छान्दोग्योपनिषद-8:6:1-6

# 104. प्राणायाम

श्वेताश्वतरोपनिषद-2:8-10

# 105. मोक्ष प्राप्ति के लिए ईश्वर को जानने के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं

श्वेताश्वतरोपनिषद-3:8

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:15

श्वेताश्वतरोपनिषद-6:20

## 106. जीवात्मा कर्मानुसार भोग भोक्ता है

श्वेताश्वतरोपनिषद-5:7

श्वेताश्वतरोपनिषद-5:11

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:5

# 107. कामता व निष्कामता

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:6

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:7

# 108. जीवात्मा कैसा है

श्वेताश्वतरोपनिषद-5:7-12

बृहदारण्यकोपनिषद-1:4:17

बृहदारण्यकोपनिषद-2:1:16-20

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:1-25

# 109. कर्म वा चेतनानुसार आत्मा शरीर धारण करता है

श्वेताश्वतरोपनिषद-5:12

# 110. जीवात्मा की मोक्ष अवस्था में पहुंचने की यात्रा

बृहदारण्यकोपनिषद-5:10:1

# 111. मन ही दिव्य नेत्र है

छान्दोग्योपनिषद-8:12:5

# 112. यथा पिंडे तथा ब्रह्मांडे

बृहदारण्यकोपनिषद-1:1:1-2

बृहदारण्यकोपनिषद-1:2:1-3

बृहदारण्यकोपनिषद-1:2:6-7

# 113. इंद्र को प्रजापति द्वारा 108 वर्ष में ब्रह्म उपदेश

छान्दोग्योपनिषद-8:8:1-5

छान्दोग्योपनिषद-8:9:1-3

छान्दोग्योपनिषद-8:10:1-4

छान्दोग्योपनिषद-8:11:1-3

छान्दोग्योपनिषद-8:12:1-6

छान्दोग्योपनिषद-8:13:1

छान्दोग्योपनिषद-8:14:1

छान्दोग्योपनिषद-8:15:1

## 114. अच्छा -बुराई (देव-दानव) का मनोविज्ञान

बृहदारण्यकोपनिषद-1:3:1-18

# 115. तमसो मा ज्योतिर्गमय

बृहदारण्यकोपनिषद-1:3:28

## 116. अच्छाई की भी अति नहीं करनी चाहिए

बृहदारण्यकोपनिषद-1:3:10

## 117. सृष्टि रचना का अलंकारिक व गुढ उपदेश

बृहदारण्यकोपनिषद-1:4:1-17

छान्दोग्योपनिषद-3:19:1-4

## 118. मैं (अहम्) का दर्शन (philosophy)

बृहदारण्यकोपनिषद-1:4:1-2

बृहदारण्यकोपनिषद-2:4:1-14

119. आत्मा(जीवात्मा व परमात्मा) इन दोनों के अतिरिक्त कुछ भी प्रिय मत समझो क्योंकि बाकी के प्रिय पदार्थ भी इन दो को प्रिय जानने से ही वृद्धि पाएंगे

बृहदारण्यकोपनिषद-1:4:8

## 120. ब्राह्मण धर्म व क्षत्रिय धर्म एक दूसरे के पूरक हैं

बृहदारण्यकोपनिषद-1:4:11

## 121. भगवान श्री कृष्ण अवतार या ईश्वर नहीं थे

छान्दोग्योपनिषद-3:17:1-7

# 122. देवकी पुत्र कृष्ण

छान्दोग्योपनिषद-3:17:6

# 123. समाज का पोषण-भरण करने से पृथ्वी व शुद्र एक समान कह गए हैं

बृहदारण्यकोपनिषद-1:4:13

# 124. धर्म का स्वरूप

बृहदारण्यकोपनिषद-1:4:14

# 125. निर्बल का बल है धर्म

बृहदारण्यकोपनिषद-1:4:14

## 126. जीवात्मा के जाने बिना परमात्मा को नहीं जाना जा सकता

बृहदारण्यकोपनिषद-1:4:15

# 127. ब्रह्म विद्या (आध्यात्मिक उन्नति)

छान्दोग्योपनिषद-3:6:1-3

छान्दोग्योपनिषद-3:7:1-4

छान्दोग्योपनिषद-3:8:1-4

छान्दोग्योपनिषद-3:9:1-4

छान्दोग्योपनिषद-3:10:1-4

छान्दोग्योपनिषद-3:11:1-6

# 128. नाम रूप कर्म क्रिया

छान्दोग्योपनिषद-1:6:1-3

# 129. पृथ्वी आकाश में स्थित है

छान्दोग्योपनिषद-1:9:1

छान्दोग्योपनिषद-2:17:1

बृहदारण्यकोपनिषद-3:8:3-4

तैत्तिरीयोपनिषद- ब्रह्मानंदवल्ली:9:1

130. सांसारिक वासनाओं में हम भय के कारण फसते हैं। अतः जो ईश्वर के अभय रूप को जान लेता है वह अभय हो जाता है

बृहदारण्यकोपनिषद-4:4:25

# 131. कुत्तों की हिंकार

छान्दोग्योपनिषद-1:12:1-5

# 132. गांय उदगीत है

छान्दोग्योपनिषद-2:6:1

छान्दोग्योपनिषद-2:18:1

## 133. प्रजापति द्वारा 'द' का मनुष्य,देव,असुर को उपदेश

बृहदारण्यकोपनिषद-5:2:1-3

# 134. वसु रुद्र आदित्य 24,44,48 वर्ष का ब्रह्मचर्य

छान्दोग्योपनिषद-3:16:1-7

# 135. होम हवन क्रिया

बृहदारण्यकोपनिषद-6:3:1-13

# 136. गर्भाधान

बृहदारण्यकोपनिषद-6:5:1-28

# 137. रैक्क मुनि का उपदेश

छान्दोग्योपनिषद-4:1:1-8

छान्दोग्योपनिषद-4:2:1-5

छान्दोग्योपनिषद-4:3:1-8

# 138. सत्यकाम जाबाल की कथा

छान्दोग्योपनिषद-4:4:1-5

छान्दोग्योपनिषद-4:5:1-3

छान्दोग्योपनिषद-4:6:1-4

छान्दोग्योपनिषद-4:7:1-4

छान्दोग्योपनिषद-4:8:1-4

छान्दोग्योपनिषद-4:9:1-3

छान्दोग्योपनिषद-4:10:1-5

छान्दोग्योपनिषद-4:11:1-2

छान्दोग्योपनिषद-4:12:1-2

छान्दोग्योपनिषद-4:13:1-2

छान्दोग्योपनिषद-4:14:1-3

छान्दोग्योपनिषद-4:15:1-5

छान्दोग्योपनिषद-4:16:1-5

छान्दोग्योपनिषद-4:17:1-10

# 139. सत्य ही ब्राह्मण की पहचान है

छान्दोग्योपनिषद-4:1:1-5

# 140. यज्ञ का ब्रह्म कैसा हो

छान्दोग्योपनिषद-4:16:1-5

छान्दोग्योपनिषद-4:17:1-10

# 141. न्यायोचित हिंसा गलत नहीं है

छान्दोग्योपनिषद-8:15:1

## 142. महर्षि नारद की आत्मवेत्ता होने की कथा

छान्दोग्योपनिषद-7:1:1-5

छान्दोग्योपनिषद-7:2:1-2

छान्दोग्योपनिषद-7:3:1-2

छान्दोग्योपनिषद-7:4:1-3

छान्दोग्योपनिषद-7:5:1-3

छान्दोग्योपनिषद-7:6:1-2

छान्दोग्योपनिषद-7:7:1-2

छान्दोग्योपनिषद-7:8:1-2

छान्दोग्योपनिषद-7:9:1-2

छान्दोग्योपनिषद-7:10:1-2

छान्दोग्योपनिषद-7:11:1-2

छान्दोग्योपनिषद-7:12:1-2

छान्दोग्योपनिषद-7:13:1-2

छान्दोग्योपनिषद-7:14:1-2

छान्दोग्योपनिषद-7:15:1-4

छान्दोग्योपनिषद-7:16:1

छान्दोग्योपनिषद-7:17:1

छान्दोग्योपनिषद-7:18:1

छान्दोग्योपनिषद-7:19:1

छान्दोग्योपनिषद-7:20:1

छान्दोग्योपनिषद-7:21:1

छान्दोग्योपनिषद-7:22:1

छान्दोग्योपनिषद-7:23:1

छान्दोग्योपनिषद-7:24:1-2

छान्दोग्योपनिषद-7:25:1-2

छान्दोग्योपनिषद-7:26:1-2

# 143. वाक तेजोमय है

छान्दोग्योपनिषद-6:5:1-4

छान्दोग्योपनिषद-6:6:1-5

# 144. तत्वमसि का रहस्य

छान्दोग्योपनिषद-6:8:1-7

छान्दोग्योपनिषद-6:9:1-4

छान्दोग्योपनिषद-6:10:1-3

छान्दोग्योपनिषद-6:11:1-3

छान्दोग्योपनिषद-6:12:1-3

छान्दोग्योपनिषद-6:13:1-3

छान्दोग्योपनिषद-6:14:1-3

छान्दोग्योपनिषद-6:15:1-3

छान्दोग्योपनिषद-6:16:1-3

# 145. अश्वपति का ब्रह्म उपदेश

छान्दोग्योपनिषद-5:11:1-7

छान्दोग्योपनिषद-5:12:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:13:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:14:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:15:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:16:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:17:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:18:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:19:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:20:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:21:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:22:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:23:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:24:1-5

# 146. श्वेतकेतु की कथा

छान्दोग्योपनिषद-5:3:1-7

छान्दोग्योपनिषद-5:4:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:5:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:6:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:7:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:8:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:9:1-2

छान्दोग्योपनिषद-5:10:1-10

छान्दोग्योपनिषद-6:1:1-7

छान्दोग्योपनिषद-6:2:1-4

छान्दोग्योपनिषद-6:3:1-4

छान्दोग्योपनिषद-6:4:1-7

छान्दोग्योपनिषद-6:5:1-4

छान्दोग्योपनिषद-6:6:1-5

छान्दोग्योपनिषद-6:7:1-6

छान्दोग्योपनिषद-6:8:1-7

छान्दोग्योपनिषद-6:9:1-4

छान्दोग्योपनिषद-6:10:1-3

छान्दोग्योपनिषद-6:11:1-3

छान्दोग्योपनिषद-6:12:1-3

छान्दोग्योपनिषद-6:13:1-3

छान्दोग्योपनिषद-6:14:1-3

छान्दोग्योपनिषद-6:15:1-3

छान्दोग्योपनिषद-6:16:1-3

# 147. पंचविध सामोपासना

छान्दोग्योपनिषद-2:1:1-4

छान्दोग्योपनिषद-2:2:1-3

छान्दोग्योपनिषद-2:3:1-2

छान्दोग्योपनिषद-2:4:1-2

छान्दोग्योपनिषद-2:5:1-2

छान्दोग्योपनिषद-2:6:1-2

छान्दोग्योपनिषद-2:7:1-2

छान्दोग्योपनिषद-2:8:1-3

छान्दोग्योपनिषद-2:9:1-8

छान्दोग्योपनिषद-2:10:1-6

छान्दोग्योपनिषद-2:11:1-2

छान्दोग्योपनिषद-2:12:1-2

छान्दोग्योपनिषद-2:13:1-2

छान्दोग्योपनिषद-2:14:1-2

छान्दोग्योपनिषद-2:15:1-2

छान्दोग्योपनिषद-2:16:1-2

छान्दोग्योपनिषद-2:17:1--2

छान्दोग्योपनिषद-2:18:1-2

छान्दोग्योपनिषद-2:19:1-2

छान्दोग्योपनिषद-2:20:1-2

छान्दोग्योपनिषद-2:21:1-4

छान्दोग्योपनिषद-2:22:1-5

छान्दोग्योपनिषद-2:23:1-3

छान्दोग्योपनिषद-2:24:1-16

# 148. अश्वमेध

बृहदारण्यकोपनिषद-1:2:7

# 149. अहम् ब्रह्मास्मि

बृहदारण्यकोपनिषद-1:4:10

# संदर्भ तालिका

1. ओंकार, प्रणव,उद्गीथ व्याख्या
2. ईश्वर आनंद स्वरूप है
3. ईश्वर सर्वज्ञ है
4. ओ३म पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
5. ईश्वर अंतर्यामी है
6. ईश्वर अद्वैत है
7. ईश्वर अव्यवहार्य है
8. ईश्वर चेतना मुख है
9. ईश्वर इंद्रियातीत है
10. ईश्वर से ही प्राण क्रियाएं-कंपन संभव है

11. ईश्वर तत्व क्या है,कैसा है,कौन है

12. ईश्वर हर भौतिक पदार्थ का निमित्त कारण है

13. ईश्वर मान-अपमान, आदर-निरादर से ऊपर है

14. ईश्वर सूक्ष्मातिसूक्ष्म और महतोमहत् है

15. ईश्वर एक है

16. ईश्वर अचल है

17. ईश्वर सर्वव्यापक है

18. ईश्वर निराकार है

19. ईश्वर सर्वद्दष्टा है

20. ईश्वर निराधार है

21. ईश्वर शुभ अशुभ कर्मों से रहित है

22. ईश्वर सूक्ष्मातिसूक्ष्म है

23. ईश्वर सर्वोत्कृष्ट है

24. ईश्वर रचित सृष्टि प्रवाह से अनादि है

25. ईश्वर अक्षत है

26. ईश्वर जन्म मरण से रहित है

27. ईश्वर शुद्ध है

28. ईश्वर स्वयंभू है

29. संपूर्ण सृष्टि में ईश्वर की निमित्ता को हटा देने से यानी कार्य-ब्रह्म(भौतिक पदार्थ) को हटा देने से ही हम ब्रह्म के स्वरूप को जान (ज्ञानचक्षु)सकते हैं

30. ईश्वर (ब्रह्म) सत्य है

31. ईश्वर अविनाशी है

32. ईश्वर गुरुओं का भी गुरु है

33. ईश्वर अनंत है

34. ईश्वर ज्ञानस्वरूप है

35. ईश्वर किसी सीमित वस्तु के अंदर या बाहर, आगे या पीछे नहीं है, जैसे कि वह कोई सीमित वस्तु हो

36. ईश्वर तर्क से परे है

37. ईश्वर के मूर्त तथा अमूर्त रूप की मीमांसा

38. ईश्वर नित्य है

39. ईश्वर अनादि है

40. संसार चक्र काल या स्वभाव से नहीं चल रहा है। बल्कि इसका कारण ईश्वर है

41. ईश्वर महाकाल है

42. चेतन का जड़ से सहयोग करवा कर ईश्वर सृष्टि बनता है

43. ईश्वर में ज्ञान ,बल,क्रिया स्वाभाविक है

44. ईश्वर के ऊपर कोई (शासक) नहीं है

45. ईश्वर का कोई लिंग नहीं है

46. परमसूक्ष्मता में परमात्मा ही शेष रहता है

47. ईश्वर की परमसूक्ष्मता में, न वहां सूर्य चमकता, न वहां चंद्रमा चमकते, न तारे चमकते,अग्नि की तो बात ही क्या

48. सब देवों का देवत्व एक देव(परमात्मा) से ही है

49. भिन्न-भिन्न पदार्थों में ईश्वर को भी भिन्न-भिन्न मानकर जो उपासना करता है वह नासमझ है

50. मोक्षकल, मोक्ष की अवधि सीमित है

51. जो ईश्वर में नानात्व को देखते हुए भी उसको एक जानता है वही मृत्यु को तरता है

52. योगी को ईश्वर तत्व का अच्छे से बोध हो जाने के बाद ज्यादा शब्दजाल में नहीं उलझना चाहिए

53. मुक्तिकाल के बीच में पुनरावृत्ति नहीं होती

54. विद्वान आत्मस्थ लोग फिर संतान की इच्छा नहीं करते

55. सांसारिक पदार्थों को अनासक्त रूप से भोगो

56. सुकर्म करते हुए ही 100 वर्ष तक जीने की कामना करो

57. अवैदिक कर्म आत्मा विरुद्ध कर्म (आत्महत्या) करने वाले अंधकार में योनियों में उत्पन्न होते हैं

58. जो मनुष्य न अध्यात्म को जानता, न भौतिकवाद को जानता, वह अंधकार में गिरता है

59. 33 देवता

60. विद्या या अविद्या मात्र एक की उपासना अंधकार में डालती है

61. विद्या व अविद्या दोनों को जानके ही वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति होती है

62. स्वप्नावस्था

63. प्रकृति और ईश्वर को ठीक- ठीक जानने वाला मोक्ष प्राप्त करता है

64. शरीर का जलाकर अंतिम संस्कार

65. नमस्ते

66. प्रज्ञानं ब्रह्म

67. पांच महासंहिताएं

68. महाव्याहृतिया

69. जीव(आत्मा)कहां रहती है

70. तप महिमा

71. अन्न महिमा

72. प्राण महिमा

73. आनंद मीमांसा

74. गायत्री महिमा

75. पुराने पापों को लेकर आत्मा को दुख नहीं पहुंचना चाहिए

76. अन्न ब्रह्म

77. रात को रति क्रिया ब्रह्मचर्य ही है

78. ब्रह्मविद्या (वेद) सर्व विद्या का आधार है

79. ऋषि भी सर्वज्ञ नहीं होते

80. परा विद्या

81. अपरा विद्या

82. मोक्ष उपदेश

83. वेदोक्त मार्ग(धर्म) ही सर्वश्रेष्ठ है

84. हवन आचार

85. मात्र कर्मकांडों से मोक्ष नहीं मिलता

86. जो ईश्वर को नहीं जानते वे उसकी ऋचाओं से क्या ही कर लेंगे

87. संपूर्ण प्रजा किससे उत्पन्न होती है

88. मधुमक्खियों में एक रानी मक्खी होती है

89. धन से मुक्ति नहीं होती

90. पुनर्जन्म

91. उपनिषद गुरु-शिष्य परंपरा

92. ब्रह्म यज्ञ

93. मृत्यु के बाद आत्मा का दूसरा शरीर धारण करने में लगने वाले समय का एक कीड़े के उदाहरण से समझाना

94. जीवात्मा अजन्मा है

95. मृत्यु काल में जीवात्मा की अवस्था कैसी होती है

96. नचिकेता की कथा

97. आदित्य की देवमधु कल्पना

98. जीवात्मा और शरीर संबंध(रथ-रथी फिलासफी)

99. परमात्मा-प्रकृति-जीवात्मा-शरीर संबंध विज्ञान

100. त्रैतवाद

101. योग (ईश्वरोपासना-मोक्ष)

102. काल संसार का कारण नहीं है

103. परमात्मा का अनुभव आत्मा से ही संभव है

104. प्राणायाम

105. मोक्ष प्राप्ति के लिए ईश्वर को जानने के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं

106. जीवात्मा कर्मानुसार भोग भोक्ता है

107. कामता व निष्कामता

108. जीवात्मा कैसा है

109. कर्म वा चेतनानुसार आत्मा शरीर धारण करता है

110. जीवात्मा की मोक्ष अवस्था में पहुंचने की यात्रा

111. मन ही दिव्य नेत्र है

112. यथा पिंडे तथा ब्रह्मांडे

113. इंद्र को प्रजापति द्वारा 108 वर्ष में ब्रह्म उपदेश

114. अच्छा -बुराई (देव-दानव) का मनोविज्ञान

115. तमसो मा ज्योतिर्गमय

116. अच्छाई की भी अति नहीं करनी चाहिए

117. सृष्टि रचना का अलंकारिक व गुढ उपदेश

118. मैं (अहम्) का दर्शन (philosophy)

119. आत्मा(जीवात्मा व परमात्मा) इन दोनों के अतिरिक्त कुछ भी प्रिय मत समझो

120. ब्राह्मण धर्म व क्षत्रिय धर्म एक दूसरे के पूरक हैं

121. भगवान श्री कृष्ण अवतार या ईश्वर नहीं थे

122. देवकी पुत्र कृष्ण

123. समाज का पोषण-भरण करने से पृथ्वी व शुद्र एक समान कह गए हैं

124. धर्म का स्वरूप

125. निर्बल का बल है धर्म

126. जीवात्मा के जाने बिना परमात्मा को नहीं जाना जा सकता

127. ब्रह्म विद्या (आध्यात्मिक उन्नति)

128. नाम रूप कर्म क्रिया

129. पृथ्वी आकाश में स्थित है

130. सांसारिक वासनाओं में हम भय के कारण फसते हैं।

131. कुत्तों की हिंकार

132. गांय उदगीत है

133. प्रजापति द्वारा 'द' का मनुष्य,देव,असुर को उपदेश

134. वसु रुद्र आदित्य 24,44,48 वर्ष का ब्रह्मचर्य

135. होम हवन क्रिया

136. गर्भाधान

137. रैक्क मुनि का उपदेश

138. सत्यकाम जाबाल की कथा

139. सत्य ही ब्राह्मण की पहचान है

140. यज्ञ का ब्रह्मा कैसा हो

141. न्यायोचित हिंसा गलत नहीं है

142. महर्षि नारद की आत्मवेत्ता होने की कथा

143. वाक तेजोमय है

144. तत्वमसि का रहस्य

145. अश्वपति का ब्रह्म उपदेश

146. श्वेतकेतु की कथा

147. पंचविध सामोपासना

148. अश्वमेध

149. अहम् ब्रह्मास्मि

Writer & Publisher- Sandeep Arya (Om aryavart)

E-Mail- sandeepahlawat31@gmail.com
Whatsapp- 7497042040

First edition – February , 2025
PDF VERSION ONLY

- Price- आपकी इच्छा

ICICI Bank, Panipat.

Account holder – Sandeep

A/C Number – 017401559289

IFSC Code- icic0000174

**UPI ID- 7497042040@ICICI**